आपो हि ष्ठा मयोभुवः

जुलाई 2015

संरक्षक
राजदेव सिंह

मुख्य संपादक
डॉ. मनमोहन गोयल

परामर्शदाता
डॉ. जयवीर त्यागी
डॉ. सुधीर कुमार
डॉ. एस.डी. खोब्रागड़े
डॉ. एस.पी. राय

संपादक
डॉ. रमा मेहता

सह संपादक
प्रदीप कुमार उनियाल
पवन कुमार शर्मा

प्रकाशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान,
जलविज्ञान भवन, रूड़की-247667
उत्तराखंड

मुद्रक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान,
रूड़की के लिए
सी.एस.आई.आर.-राष्ट्रीय विज्ञान
संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग,
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

जल चेतना

मूल्य : निःशुल्क
शिकायत : 01332-249228, 249201
ई-मेल : jalchetna44@gmail.com

सम्पादकीय

संस्थान की तकनीकी पत्रिका ''जल चेतना'' का जुलाई 2015 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यधिक हर्ष हो रहा है। आशा ही नहीं बल्कि विश्वास है कि यह अंक सभी प्रबुद्ध पाठकों एवं सुधीजनों को रोचक एवं उपयोगी लगेगा। आमतौर पर यह कहा जाता है विज्ञान एवं तकनीकी विषयों पर हिंदी में लिखना दुष्कर कार्य है परंतु यदि मन में अटूट विश्वास व लगन हो तो कोई कार्य कठिन नहीं होता। इसी का परिणाम है कि संस्थान पिछले 5 वर्ष से इस तकनीकी पत्रिका का सफलतापूर्वक प्रकाशन कर रहा है। संस्थान का प्रयास है कि इस पत्रिका के माध्यम से वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों से जुड़ी विभिन्न जानकारियों को जनसाधरण तक पहुंचाया जाए जिससे समाज का हर वर्ग जल संबंधी शोध कार्यों की नित नई जानकारियों का लाभ उठा सके। अभी तक संस्थान सामान्य तौर पर जल एवं जलविज्ञान से जुड़े विभिन्न विषयों की जानकारियों को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से जन साधारण तक पहुंचाता रहा है। परंतु अब यह संस्थान पिछले पांच वर्षों से इन महत्वपूर्ण जानकारियों को हिंदी भाषा के माध्यम से जन-जन तक पहुंचा रहा है। संस्थान ने प्रयास किया है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संबंधित विषयों की जानकारियों के साथ-साथ जल चेतना में ऐसे लेखों को भी सम्मिलित किया जाए जिनका जनसाधारण के जीवन से कोई न कोई सरोकार अवश्य हो। यह ध्यान रखा गया है कि लेखों की भाषा सरल व सुबोध हो ताकि हर वर्ग के पाठक इन्हें आसानी से समझ सकें।

प्रस्तुत अंक में ''गंगा में प्रदूषण : एक रिपोर्ट'', ''डॉल्फिन बचाओ गंगा बचाओ'', ''पर्यावरण को दूषित करता ई-कचरा'', ''बारिश में आसमानी कहर से कैसे हो बचाव'', ''स्वयं के हित में है जल व अन्य संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग'', ''जल जीवों द्वारा जल शोधन'' इत्यादि जैसे रोचक एवं जनोपयोगी लेखों को सम्मिलित किया गया है। जल से संबंधित तकनीकी जानकारी के अतिरिक्त कुछ अन्य रोचक विषयों जैसे कि ''खुदाई'', ''नारद पुराण में जल संचय एवं संरक्षण के स्वर'', ''संस्कृति विकास का मूलाधार-जल'' इत्यादि पर भी लेख शामिल किये गये हैं।

विगत एक दशक से देश में जल की उपलब्धता एवं गुणवत्ता से संबंधित समस्याओं में काफी बढ़ोतरी हुई है। इसका प्रमुख कारण जनसाधारण को जल के संबंध में पर्याप्त जानकारी का न होना है। अतः इस पत्रिका के माध्यम से जल से संबंधित महत्वपूर्ण एवं उपयोगी जानकारियों को जनसामान्य तक पहुंचाना ही हमारा परम उद्देश्य है ताकि आने वाले समय में पानी के दुरूपयोग को कम किया जा सके तथा इसकी निरन्तर गिरती हुई गुणवत्ता पर विराम लगाया जा सके। जन-जागरूकता अभियान एवं प्रचार-प्रसार की दृष्टि से यह पत्रिका भारत सरकार की ओर से निःशुल्क वितरित की जा रही है। अतः जो भी सुधी पाठक इस पत्रिका को मंगवाना चाहते हैं वे इस पत्रिका के अंत में दिये गये सदस्यता फार्म को भरकर इसे सम्पादक के नाम पर भेजने का कष्ट करें ताकि उनका नाम सदस्यता सूची में शामिल किया जा सके।

सम्पादक मंडल उन समस्त विद्वत लेखकों का आभारी है जिन्होंने इस पत्रिका के लिए अपने रोचक एवं उपयोगी लेख देकर हमारा उत्साहवर्धन किया है। जल चेतना के इस अंक में जिन स्रोतों से चित्रों का संकलन किया गया है, संपादक मंडल उन सभी का हार्दिक आभार प्रकट करता है।

पत्रिका के प्रकाशन में हमें राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (सी.एस.आई.आर) नई दिल्ली के पदाधिकारियों ने भरपूर सहयोग प्रदान किया है, इसके लिये हम हृदय से उन सभी का आभार प्रकट करते हैं।

हमें विश्वास है कि यह पत्रिका पाठकों को अत्यंत रोचक तथा उपयोगी लगेगी। पत्रिका के आगामी अंकों को और आकर्षक बनाने तथा सामग्री एवं साज-सज्जा में सुधार लाने के लिए समस्त सुधी पाठकों के विचारों एवं प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा के साथ, यह अंक आपको सादर प्रस्तुत।

सम्पादकीय : 01332-249262, 249228,
फैक्स : 01332-272123
ई-मेल : jalchetna44@gmail.com
वेब साइट : www.@nih.ernet.in

© राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
पत्रिका में प्रकाशित आलेख एवं रचनाओं में प्रस्तुत तथ्य लेखकों के अपने विचार हैं, संपादक मंडल एवं संस्थान का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
पत्रिका से सम्बन्धित सभी विवाद रूड़की न्यायालय द्वारा ही निपटाए जायेंगे।